बुजुर्गों के लिए...

तारांशु

मासिक

सितम्बर – 2015 वर्ष 3, अंक 11, पृ.सं. 20

मूल्य – 5 रु.

आइये, आप और हम मिलकर करें एक प्रयास :

मुरझाए चेहरों के आँखों की चमक लौटाने का।

आनन्द वृद्धाश्रम :-

आज़ादी का पर्व – 2015

एक वृद्ध सहयोग राशि रु. 5000/- प्रति माह

आनन्द वृद्धाश्रम–वासियों ने तारा संस्थान के प्राँगण में झंडारोहण करके स्वाधीनता दिवस – 2015 जोश–खरोश के साथ मनाया। बाद में उन्होंने देशभक्ति से ओतप्रोत गीत व कविताएँ प्रस्तुत की।

झंडारोहण का दृश्य

मेले का आनन्द उठाते वृद्धाश्रम वासी

आनन्द वृद्धाश्रम वासी दिनांक 17 अगस्त, 2015 को गुलाब बाग, उदयपुर में आयोजित होने वाले वार्षिक सुखिया सोमवार के मेले में शामिल हुए एवं वहाँ अनेक मनोरंजक गतिविधियों में भाग लिया।

आप भी यदि किसी असहाय बुजुर्ग बन्धु के लिए 'आनन्द वृद्धाश्रम' में आवास की मानवीय सुविधा उपलब्ध करवाने की सेवा भावना रखते हैं, तो कृपया प्रति बुजुर्ग 5000 रु. प्रतिमाह की दर से अपना दान सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने की कृपा करें।
01 माह – 5000 रु., 03 माह – 15000 रु., 06 माह – 30000 रु., 01 वर्ष – 60000 रु.

वृद्धाश्रम आवासियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। उनके लिए वृद्धाश्रम की सभी सेवाएँ सुविधाएँ – भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा देखभाल आदि सर्वथा निःशुल्क हैं।

आशीर्वाद
डॉ. कैलाश 'मानव'
संस्थापक एवं प्रबन्ध न्यासी,
नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट), उदयपुर

आभार
श्री एन.पी. भार्गव
मुख्य संरक्षक, तारा संस्थान,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्रीमती शमा – श्री रमेश सचदेवा
संरक्षक,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्री सत्यभूषण जैन
संरक्षक,
प्रमुख समाजसेवी, दिल्ली

प्रकाशक एवं सम्पादक
कल्पना गोयल

दिग्दर्शक
दीपेश मित्तल

कार्यकारी सम्पादक
तखत सिंह राव

ले-आउट व ग्राफिक डिजाइनर
गौरव अग्रवाल

संयोजन सहायक
जगदीश मुण्डानिया

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ संख्या
आनन्द वृद्धाश्रम गतिविधियाँ	–	02
अनुक्रमणिका	–	03
जद्दोजहद..... एक जिंदगी बचाने की.... / साथी हाथ बढ़ाना	–	04–05
मस्ती	–	06
हमारे सेवा प्रकल्प : गौरी योजना	–	07
हमारे सेवा प्रकल्प : तृप्ति योजना / केस स्टडी : तारा नेत्रालय	–	08
तारा के सितारे : शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल	–	09
प्रस्तावित वृद्धाश्रम.... / प्रेरक प्रसंग	–	10
स्वास्थ्य / प्रेरणा	–	11
हमारे भामाशाह	–	12
मासिक अपडेट्स : मोतियाबिन्द जाँच शिविर	–	13–15
स्वागत	–	16
धन्यवाद	–	17–18
सम्पर्क सूत्र – तारा संस्थान	–	19

आशीर्वाद – डॉ. कैलाश 'मानव', संस्थापक – नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीमती कल्पना गोयल अपनी पूज्य माता एवं पूज्य पिता डॉ. कैलाश 'मानव' की सन्निधि में,

'तारांशु' – स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240–ए, हिरण मगरी, सेक्टर – 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाष कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच – III, उद्योग केन्द्र एक्टेंषन – II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेष) में मुद्रित, सम्पादक – श्रीमती कल्पना गोयल

जद्दोजहद.... एक जिंदगी बचाने की....

श्री विवेकानन्द खरे आनन्द के पलों में

आज से लगभग ढाई साल पहले मुम्बई के सांताक्रूंज में रहने वाले रमेश भाई शाह का फोन आया था कि तारा संस्थान के आनन्द वृद्धाश्रम में यदि जगह हो तो मैं एक बुजुर्ग को भेजना चाहता हूँ.... जगह थी तो मैंने हाँ कर दी.... थोड़े दिनों बाद एक बुजुर्ग मुंबई से आ गए उनका नाम था विवेकानन्द खरे। जब विवेक आए तो वो ठीक से चल भी नहीं पाते थे बल्कि खड़े होने के लिए भी उनको वॉकर का सहारा लेना पड़ता था, इतने कमजोर थे कि लगता था मानो शरीर में जान ही ना हो। ''आनन्द वृद्धाश्रम'' में जब अच्छा खाना–पीना हुआ तो विवेक जी के शरीर मे जान आने लगी और वो वॉकर के सहारे चलते लगे। फिर वॉकर भी छूट गया, एक छड़ी के सहारे अब वो आराम से घूम सकते थे। धीरे धीरे विवेक आनन्द वृद्धाश्रम के काम में हाथ बंटाने लगे... बाजार से सामान लाना हो या तृप्ति योजना के बुजुर्गों हेतु खाने के पैकेट बनाना सब में वो मदद करते.... कभी कभी तो आनन्द वृद्धाश्रम में कोई बुजुर्ग ज्यादा बीमार हो जाते और बिस्तर में ही मल–मूत्र कर देते तो विवेक उनको भी साफ कर कपड़े बदल देते थे जो कि मेरे हिसाब से बहुत मुश्किल कार्य था। पिछले कुछ सालों में विवेकानन्द खरे आनन्द वृद्धाश्रम में प्यार से ''विक्की'' के नाम से जाने लगे और सभी बुजुर्ग उनसे स्नेह करने लगे। विवेक जब तारा संस्थान में आए जो उनके बारे में बहुत ज्यादा जानकारी नहीं थी, श्री रमेश जी शाह जिन्होंने विवेक को भेजा था, उनसे एक दो बार बात हुई और विवेक जी की जो कहानी सुनने को मिली वो रोंगटे खड़े करने वाली थी :

''रमेश भाई सप्ताह में एक दिन मुम्बई में भिखारियों को खाना खिलाते हैं और ऐसे ही एक दिन वो जब भिखारियों को भोजन करवा रहे थे तो उन्हें विवेक जी मिले.... विवेक जी थोड़ी बहुत अंग्रेजी बोल रहे थे, यह देख कर रमेश भाई थोड़ा चौंक गए और उन्हें लगा यह व्यक्ति भिखारी तो नहीं हो सकता, जरूर कोई परिस्थिति इसे सड़क पर लाई है। रमेश भाई ने विवेक जी से बातचीत की तो विवेक ने बताया कि वो मैकेनिकल इंजीनियर थे और उनका मुम्बई के जुहू इलाके में एक फ्लेट था। जब विवेक रिटायर हुए तो उनके भाई ने उनसे कहा कि यह फ्लेट बेच कर यह पैसा मुझे दे दो तो मैं और मेरा परिवार आपकी ताउम्र देखभाल करेंगे, क्योंकि विवेक जी ने शादी नहीं की थी और उनका कोई परिवार नहीं था, इसलिए उन्होंने भाई की सलाह मानी और फ्लेट बैच कर पैसे भाई को दे दिये। भाई और उनके परिवार ने विवेक जी की थोड़े समय तो देखभाल थी लेकिन फिर कुछ–न–कुछ कारण बताकर उनको घर से निकाल कर मुम्बई के ही एक वृद्धाश्रम में छोड़ दिया जहाँ पर वृद्ध लोगें से रहने खाने पीने का पैसा लिया जाता था। विवेक अपना शेष जीवन वहाँ बिता लेते लेकिन जिस भाई ने फ्लेट का सारा पैसा अपने पास रख लिया था उसने वृद्धाश्रम को पैसा देना भी बन्द कर दिया तो वृद्धाश्रम ने भी विवेक जी को बाहर निकाल दिया। बस यही से विवेक जी सड़क पर आ गए और भिखारियों का जीवन बिताने लगे। जो मिलता वो खा लेते और नहीं मिलता तो नहीं खाते। और इस कारण वे इतने कमजोर हो गए थे के उनसे ठंग से खड़ा भी नहीं हुआ जाता था। जब भी मैं विवेक जी को देखती तो मन में विचार आता कि कोई भाई इतना क्रूर कैसे हो सकता है कि अपने भाई की सम्पत्ति हड़प कर उसे सड़क पर भीख मांगने छोड़ दिया....! यदि रमेश भाई विवेक को तारा संस्थान में नहीं भेजते तो वे भी मुम्बई की सड़क पर एक लावरिस लाश बनकर समाप्त हो जाते। लेकिन नियति उनको बचाना चाहती थी तो विवेक बच गए। विवेक एक अच्छा खाता–पीता जीवन आनन्द वृद्धाश्रम में और सभी बुजुर्गों के साथ मिल जुल कर बिता रहे थे.... कुछ महीनों पहले विवेक जी के मुह में एक गाँठ का पता लगा। उदयपुर के सरकारी मेडिकल कॉलेज में उनको दिखाया गया तो डॉ. ने आशंका व्यक्त थी कि शायद यह गाँठ कैंसर हो सकती है। गाँठ की बायोप्सी करवाई गई और डॉक्टर की आशंका सच निकली––विवेक को कैंसर था। हमें जब यह पता लगा तो थोड़ा परेशान हुए क्योंकि मालूम था कैंसर का इलाज न केवल मुश्किल होता है बाल्कि बहुत महंगा भी होता है। मन में यहाँ ख्याल आया कि ईश्वर ने जब उन्हें हमारे पास भेजा है तो उसकी इच्छा यही होगी की हम उनकी जिन्दगी बचाएँ। इसी ख्याल ने ताकत दी और यह निर्णय किया कि विवेक जी को अच्छे से ईलाज करवा कर स्वस्थ किया जाए.....

विवेक जी वृद्धाश्रम के मित्रों के साथ हँसी – ठिठोली करते हुए

ऑपरेशन के पश्चात लौटते हुए विवेक जी

.....सरकारी अस्पताल में पता किया तो बताया गया की उनका ऑपरेशन करना पड़ेगा लेकिन वहाँ ऑपरेशन की सुविधा नहीं थी। ऑपरेशन के लिए निजी अस्पताल में पता किया तो वह बहुत ही महंगा लग रहा था। कहीं से पता लगा की मुम्बई के टाटा मैमोरियल अस्पताल में कम पैसे में ऑपरेशन हो जायेगा तो विवेक जी को संस्थान के एक कार्यकर्त्ता के साथ मुम्बई भेजा। मुम्बई के टाटा मैमोरियल में बहुत सारी जाँचें हुई और उन में भी विवेक जी के कैंसर की पुष्टि हुई। टाटा मैमोरियल में विवेक जी को बार–बार लाना और ले जाना बहुत ही पीड़ादायक था। क्योंकि मीरा रोड स्थित तारा के हॉस्पीटल जहाँ वो रुके हुए थे वहाँ से टाटा मैमोरियल आना जाना और घंटों डॉक्टर को दिखाने व जाँचें के पहले इंतजार करना तकलीफ देय था। तो फिर यह सोचा गया कि उदयपुर के एक निजी अस्पताल में ही इनका ऑपरेशन करवा दिया जाए। विवेक जी को उदयपुर के निजी अस्पताल में बताया गया और एक जाँच में यह पता लगा के उनके फेफड़े में भी एक गाँठ है। वह गाँठ भी अगर कैंसर होती तो विवेक जी की मुँह वाली गाँठ का ऑपरेशन भी नहीं किया जाता क्योंकि कैंसर यदि ज्यादा फैला हुआ हो तो ऑपरेशन का कोई फायदा नहीं होता है। फेफड़े की गाँठ की बहुत महंगी एक जाँच अहमदाबाद से हुई और उसमें यह पता लगा की कैंसर नहीं है। दिनांक 27 जुलाई, 2015 को विवेक जी के मुँह में कैंसर का ऑपेरशन किया गया। जबड़े का एक बहुत बड़ा हिस्सा हटाकर उसकी जगह दूसरा माँस लगाया गया। यह लेख लिखे जाने के कुछ दिन पूर्व विवेक जी को अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी। जब तक घाव नहीं भरेंगे तब तक कुछ खा नहीं सकेंगे। उनके नाक में भोजन देने की एक नली लगी हुई है, जब घाव भर जाएंगे तो विवेक जी को कीमिओथैरेपी या रेडियोथेरेपी दी जाएगी और हमें विश्वास है कि वे पूर्णतः स्वस्थ होंगे। श्री विवेकानन्द खरे या विवेक या विक्की जिनका वर्णन इस लेख के माध्यम से किया है वो आप से दो बाते बताने का प्रयास है :–

आनन्द वृद्धाश्रम में विवेक जी देखभाल करते एक बुजुर्ग।

बेडरेस्ट करते हुए विवेक जी

1. जिन बुजुर्गों के लिए हम काम करते हैं तो उनमें से अधिकांश पीड़ित बुजुर्ग वे हैं जिन्होंने अपनी सम्पत्ति अपनी मृत्यु के पहले अपने बच्चों या रिश्तेदारों को दे दी और सम्पत्ति लेने के बाद उन्हीं बच्चों या रिश्तेदारों ने उन बुजुर्गों को घर से निकाल दिया, तो यह बहुत बड़ी एक सीख है कि अपनी सम्पत्ति बच्चों के नाम अवश्य करें पर अपनी मृत्यु के बाद।

2. दूसरी, तारा संस्थान का आनन्द वृद्धाश्रम जो की बुजुर्गों के लिए पूर्णतयाः निःशुल्क है उसमें सिर्फ उनके रहने या अच्छा खाने कि व्यवस्था भर नहीं है वरन हमारा यह प्रयास रहता है कि निःशुल्क होने के बावजूद हम रहने वाले बुजुर्गों को हर संभव मेडिकल सुविधा भी उपलब्ध कराएँ। विवेक जी के पहले भी हमने कुछ गम्भीर बीमार बुजुर्गों पर कुछ लाख रुपये तक खर्च किए––चाहे संस्थान भी आर्थिक स्थिति कैसी भी हो। हम यह मानते हैं कि जब एक जिम्मेदारी ली है तो उसका पूर्ण वहन हमारे द्वारा हो। अन्त में, मैं उन सभी दानदाताओं का आभार व्यक्त करूंगी जिन्होंने श्री विवेक जी के ईलाज हेतु अपना सहयोग दिया और वृद्धाश्रम के प्रभारी श्री राजेश जैन एवम् श्री चिमन भाई को भी धन्यवाद दूंगी जिन्होंने विवेक जी के ईलाज में पूरी निष्ठा से काम किया।

कल्पना गोयल

साथी हाथ बढ़ाना...

''साथी हाथ बढ़ाना'' में हम आग्रह करते हैं उन दानदाताओं से जो तारा संस्थान से जुड़े हैं कि वे अपने परिजनों और ईष्ट मित्रों को तारा संस्थान से जोड़ें। सोच बहुत स्पष्ट है कि हम कहें कि तारा संस्थान के सेवा कार्यों में आप जुड़ें और कोई दानदाता कहे कि मैंने भी वहाँ दान किया है और आप भी अच्छे कार्य से जुड़े तो बहुत बड़ा फर्क आएगा। आप सब का सहयोग इसी तरह मिलता रहेगा तभी तारा संस्थान की गतिविधियाँ निरंतर चलती रहेंगी..... बस आप से एक ही निवेदन है जब भी थोड़ा समय मिले नीचे दिए गये फार्म में 2–4 नाम, पते व फोन नम्बर भरकर हमें भेज दीजिए और अपने इन दोस्तों से कहियेगा कि तारा से वे भी जुड़ें।

आदर सहित

कल्पना गोयल

नाम	नाम .....
पता	पता .....
..... मोबाइल नं.	..... मोबाइल नं. .....

व्हाट्सएप से :-

शेरो - शायरी

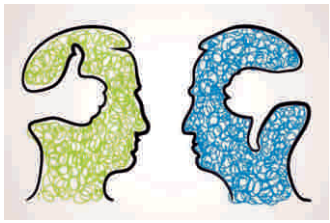

अपनी 'जिन्दगी' में हर किसी को 'अहमियत' दीजिये... ''क्योंकि जो 'अच्छे' होंगे वो 'साथ' देंगे... और जो 'बुरे' होंगे वो 'सबक' देंगे....!

खुश रहा करो, क्योंकि परेशान होने से कल की मुश्किल दूर नहीं होती बल्कि आज का सुकून भी चला जाता है.....! वक्त हर वक्त को बदल देता है सिर्फ वक्त को थोड़ा वक्त दो....!

पराजय तब नहीं होती है जब आप गिर जाते हो! पराजय तब होती है! जब आप उठने से इनकार कर देते हो!

पानी समुन्दर में हो या आँखों में, गहराई और राज दोनों में होते हैं....

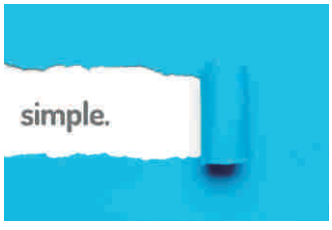

जीना ''सरल'' है...!!'' प्यार करना ''सरल'' है...!!'' हारना और जीतना भी ''सरल'' है...!!'' तो फिर ''कठिन'' क्या है...? ''सरल'' होना बहुत ''कठिन'' है...!!''

विज्ञापन :-

जीवन मन्त्रः

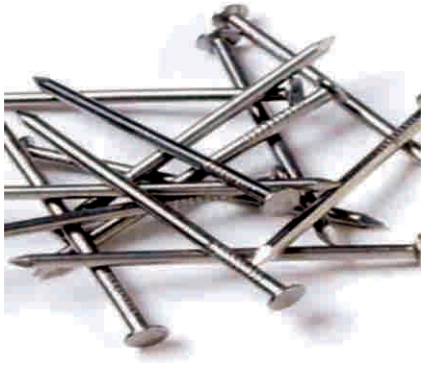

इंसान की कीमत क्या है? एक समय की बात है लोहे की दुकान में अपने पिता के साथ काम कर रहे एक बालक ने पिता से पूछा ''इस दुनिया में कोई अमीर है, कोई गरीब. किसी का सम्मान ज्यादा तो किसी का कम है, ऐसा क्यो? आखिर इंसान की कीमत क्या है?'' पिता कुछ देर शांत रहे फिर बोले ''यह लोहे की छड़ देख रहे हो, इसकी कीमत तुम जानते ही हो कि यह लगभग 200 रुपए की है। यदि में इसके छोटे छोटे कील बना दूं तो इसी छड़ की कीमत लगभग 1 हजार रुपए हो जाएगी। अब तुम बताओ, इसी तरह मैं यदि इस छड़ से बहुत सारे स्प्रिंग बना दूं तो?'' उस बच्चे ने गणना की और बोला, ''फिर तो इसकी कीमत बहुत ज्यादा हो जाएगी।'' ठीक इसी तरह इंसान की कीमत इस बात से नहीं होती कि अभी वह क्या है, बल्कि इस बात से होती है कि वह अपने आप को क्या बना सकता है। पिता ने समझाया, ''अकसर हम अपनी सही कीमत आँकने में गलती कर देते हैं। हमारे जीवन में कई बार स्थितियां अच्छी नहीं होतीं, पर इससे हमारी कीमत कम नहीं होती।'' पिता की बातों से बालक समझ गया कि इंसान की कीमत क्या है। **सीखः जीवन कभी एक सा नहीं रहता, सुख और दुख आता जाता रहता है। इंसान को कभी हिम्मत नहीं हारना चाहिए और अपने जीवन की कीमत को समझना चाहिए।**

जो सपने देखने की हिम्मत रखते हैं वो पूरी दुनिया जीत सकते हैं।

गौरी योजना

आप भी एक नि:सहाय विधवा को पेंशन प्रदान करें रु. 1000/- प्रति माह

वंदना की व्यथा

वंदना के पति दो साल पहले हृदयघात से गुजर गए। इसलिए वंदना ने स्कूल में नौकरी कर जैसे–जैसे अपनी सास व बच्चे की परवरिश करनी शुरू की।

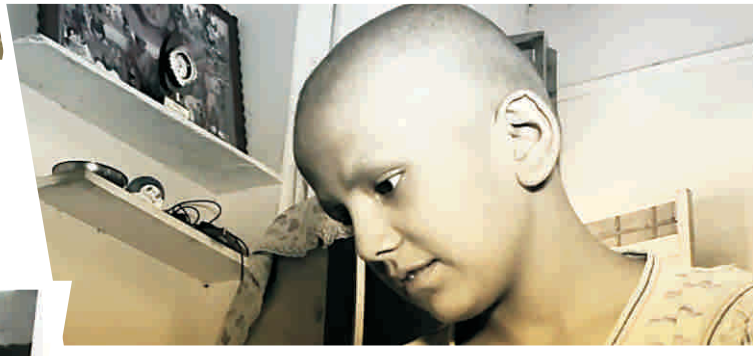

फिर दो साल बाद मालूम हुआ कि बच्चे की आँख में कैंसर हो गया है।

दु:ख की मारी वंदना पर एक और मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। स्कूल की नौकरी छोड़ कर अपने रिश्तेदारों की मदद से बच्चे को ऑपरेशन हेतु अहमदाबाद ले गई।

वंदना एक अकेली जान जैसे–तैसे जीवन बसर कर रही है और साथ ही साथ सास और बच्चे की भी ज़िम्मेदारी निभा रही है।

तारा संस्थान प्रतिमाह इन्हें गौरी योजना के अन्तर्गत 1000 रु. की पेंशन प्रदान कर कुछ राहत दे रही है। लेकिन बच्चे के कैंसर के ईलाज हेतु और आर्थिक सहायता की आवश्यकता है।

मानवीय संवेदनाओं को आहत करने वाली असहाय विधवा महिलाओं की पीड़ाओं को कुछ कम करने के प्रयास के प्रति यदि आप भी इच्छुक हों, तो कृपया प्रति विधवा महिला 1000 रु. प्रतिमाह की दर से 01 माह, 03 माह, 06 माह, 01 वर्ष या इससे भी अधिक अवधि के लिए अपना दान-सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने का अनुग्रह करें।

जो तुम्हारी बात सुनते हुए इधर-उधर देखे उस पर कभी विश्वास न करो।

तृप्ति योजना

तारा संस्थान ने मेरी ज़िन्दगी सुधार दी - बसंती गमेती

उदयपुर ग्रामीण क्षेत्र निवासी बसंती एक 24 वर्षीय नेत्रहीन एकाकी महिला है। बचपन में ही किसी बीमारीवश उसकी दोनों आँखें चली गईं। माँ–बाप ना जाने कबके गुज़र गए। अन्धता के चलते उसकी शादी भी नहीं हुई। नितांत अकेली एवं पूर्णतः अंधी यह महिला जैसे–तैसे ज़िन्दा है लेकिन चूंकि संस्थान तृप्ति योजना के अन्तर्गत इन्हें मासिक राशन देता आ रहा है सो, उनके मुँह से बरबस दुआएँ निकल पड़ती हैं।

केस स्टडी :-

तारा नेत्रालय : ढेला राम की जान जाते - जाते बची....

1 निर्धन, नि:सहाय का मोतियाबिन्द ऑपरेशन कराएँ रु. 3000/- प्रति

ढेलाराम (45 वर्ष) एक छोटा कृषक है जो उदयपुर से लगभग 80 कि.मी. दूर लसाड़िया गाँव का निवासी है। संतानहीन व नितांत गरीब इस असहाय को पिछले 6 माह से दाईं आँख से दिखाई देना बंद हो गया था। अनपढ़ ढेलाराम इसे अपनी किस्मत का खेल समझ चुप था कि करे तो क्या करे, सोचता था बिना रोशनी के कैसे खेती कर पायेगा, किसी दिन गड्डे में गिर कर मर जाएगा तो मुक्ति तो मिलेगी इन समस्याओं से! फिर किस्मत से, एक दिन इनके गाँव में तारा नेत्रालय, उदयपुर द्वारा नेत्र जाँच शिविर रखा गया जिसमे उसकी जाँच में पता चला कि उसकी दाईं आँख में पका हुआ मोतियाबिंद है जिसका तुरंत ऑपरेशन करना होगा वरना उसकी आँख पूरी तरह से खराब हो जायेगी। सो, ढेलाराम का तारा नेत्रालय, उदयपुर में ऑपरेशन हेतु चयन कर यहाँ भरती कर दिया गया! ऑपरेशन के पश्चात उसकी दाईं आँख में अच्छी तरह से दिखाना शुरू हो गया। अति प्रसन्न ढेलाराम ने तारा संस्थान का लाख–लाख शुक्रिया अदा किया कि उसका ऑपरेशन, दवाइयाँ एवं तीन दिन तक रहना–खाना सहित सम्पूर्ण खर्चा तारा संस्थान द्वारा उठाया गया।

तारा के सितारे :-

शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल, उदयपुर का एक होनहार विद्यार्थी : करण गमेती

एक विधवा के बच्चे की शिक्षा सौजन्य रु. 12000/- प्रति वर्ष

11 वर्षीय करण कक्षा 4 का एक मेधावी छात्र है। इसके पिता का करीब 8 वर्ष पूर्व देहांत हो गया था तब से इसकी निर्धन एवं अनपढ़ माँ लोगों के घरों में दैनिक कार्य करके दोनों का गुजारा चलाती है। करण कुशाग्र बुद्धि होते हुए अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम स्थान पाता है साथ ही साथ वह चित्रकला, खेल–कूद एवं नृत्य में भी रुचि रखता है। उसकी माता की इच्छा है कि उत्साह और ऊर्जा से भरपूर करण बड़ा होकर पुलिस विभाग में नौकरी कर समाज एवं देश की सेवा करें। जिस प्रकार से शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल इस बालक को सम्पूर्ण शिक्षा बिलकुल निःशुल्क देकर उसे भविष्य के सुनहरे पथ पर अग्रसर कर रहा है उसे देखते हुए स्पष्ट है कि करण एक दिन अपनी माँ और स्कूल की अपेक्षाओं पर निश्चित रूप से खरा उतरेगा।

भारत माता की जय!

शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल के बालक–बालिकाओं ने स्वतंत्रता दिवस – 2015 बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर लिया गया एक ग्रुप फोटो।

हर सच्चा क्रांतिकारी वास्तव में गहन प्रेम की भावना से संचालित होता है!

प्रस्तावित वृद्धाश्रम हेतु भूमि के लिए कृपया दान सहयोग करें

तारा संस्थान के आनन्द वृद्धाश्रम में अभी 42 बुजुर्ग रह रहे हैं। संस्थान की शुरू से यही नीति रही है कि कोई भी बुजुर्ग जो हमारे पास आए उसे मना नहीं किया जाए और वृद्धाश्रम में रहने की सुविधा दी जाए, लेकिन आज की स्थिति में पुरुषों के कक्ष में स्थान भर गए हैं और अभी हाल ही में आए एक पुरुष बुजुर्ग को एक वार्ड में स्थान देना पड़ा। इस स्थिति को देखते हुए तारा संस्थान ने यह निर्णय किया शहर के मध्य एक भूमि क्रय कर उसके ऊपर वृद्धाश्रम का निर्माण करवा जाए। उदयपुर के सेक्टर 14 में एक प्लॉट लिया है जिसका क्षेत्रफल लगभग 7 हजार वर्ग फिट है। संस्थान इस प्लॉट पर सर्व-सुविधा युक्त एक वृद्धाश्रम निर्माण की मंशा रखती है, जिसका भवन कम से कम चार-पाँच माले का होगा। संस्थान के सभी दानदाताओं से अपील है कि वे भूमि के लिए अपनी सौजन्य राशि प्रदान कर सकते हैं :-

-: भूमि सौजन्य राशि :-

भूमि सेवा रत्न	**:**	**1,00,000 रु.**
भूमि सेवा मनीषी	**:**	**51,000 रु.**
भूमि सेवा भूषण	**:**	**21,000 रु.**

भूमि हेतु सहयोग करने वाले दानदाताओं के नाम प्लॉट के मुख्य द्वार के दोनों और स्वर्णाक्षरों में अंकित किए जाएंगे और भूमि पूजन के समय आप सभी को निमंत्रित कर आपका सम्मान किया जाएगा।

प्रेरक प्रसँग :-

नन्हीं बच्ची की मुस्कान ने बदला जीने का नज़रिया

एक लाईफ चेंजिंग स्टोरी : एक आदमी हर दिन ऑफिस जाने के लिए कॉलोनी के बाहर बस स्टॉप पर खड़ा रहता है। एक दिन उसने देखा कि एक महिला अपनी बच्ची के साथ वहाँ खड़ी थी। उसने उससे बस की जानकारी मांगी। आदमी ने बसों के क्रम के अनुसार उनके नंबर बता दिए। इस दौरान उस बच्ची ने उसे प्यारी–सी स्माइल दी, जो उसके मन को छू गई, उसने जेब से चॉकलेट निकालकर उसे दे दी, जो वह अकसर घर के लिए ले लिया करता था। उस बच्ची ने उसे थैंक्यू कहा। अब लगभग हर दिन बस स्टॉप पर उस व्यक्ति की उस महिला और उसकी बच्ची से नजरें मिल ही जाती थी। वह बच्ची स्माइल करती और गुड बाय बोलकर अपनी माँ के साथ बस में चली जाती थी। कुछ दिनों में पता चला कि वह बच्ची उस कॉलोनी में ही रहती थी। वह अकसर अन्य के साथ खेलती दिख जाती थी।

फिर एक दिन बस स्टॉप पर वह दोनों नहीं दिखे। उस आदमी ने सोचा कि हो सकता है बच्ची की छुट्टी वगैरह हो। कुछ दिन बीत गए, लेकिन वह बच्ची और उसकी माँ बस स्टॉप पर नहीं आई। वह मैदान में अन्य बच्चों के साथ भी नहीं दिखी। आदमी की जिज्ञासा बढ़ गई, उसने उनके बारे में जानकारी निकाली। पता चला कि वह महिला दुनिया छोड़ कर चली गई। महिला का पति उसे धोखा देकर छोड़ गया था। उसके पास कोई नौकरी वगैरह नहीं थी, माँ–बेटी की गुजर–बसर नहीं हो पा रही थी। अकेलेपन और तनावभरी जिंदगी से उसने हार मान ली थी। उस आदमी ने उसकी बच्ची के बारे में पूछा, तो पता चला कि उसे अनाथालय में रखा गया है क्योंकि उसका कोई नहीं था और कोई उसकी जिम्मेदारी उठाने के लिए भी तैयार नहीं था।

अगले ही दिन वह आदमी अनाथालय पहुँच गया। वहाँ उसने उस बच्ची के बारे में पूछा, तो उसे इशारे से बताया गया। वह अन्य बच्चों के साथ बगीचे में खेल रही थी। उसकी नज़रें उस व्यक्ति पर पड़ी, उसने फिर वही स्माइल दी। फिर वह उसके पास आई और कहने लगी – मेरी चॉकलेट कहाँ है। आदमी मुस्कुरा दिया और उसके लिए खरीदी चॉकलेट उसे दे दी। उसने फिर मधुर आवाज में उसे थैंक्यू कहा और वह चली गई। आदमी उसे खेलते और मस्ती करते देखता रहा। रास्ते भर वह अपनी परेशानियों के बारे में सोचता रहा। वह उनके बारे में सोचता रहा, जिन्होंने उसे तकलीफ पहुँचाई। फिर भी उसे अब सब आसान लग रहा था। **उसने सोचा, ये बच्ची इस हालात में भी मुस्कुरा सकती है, तो मैं क्यों नहीं। इस तरह उसने अपनी जिंदगी से निगेटिव सोच निकाल दी और अब पहले से ज्यादा खुश रहता है।**

महान सपने देखने वालों के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं।

स्वास्थ्य :-

विचारों का स्वास्थ्य पर प्रभाव

ईश्वर ने मनुष्य के मस्तिष्क का निर्माण इस प्रकार किया है कि उसमें उत्तम विचार रहें। बुरे विचार विजातीय हैं। वे मनुष्य के ऊपर सवार हो जाते हैं तो एक प्रकार से उसके स्वाभाविक तत्त्व का हरण कर लेते हैं। बुरे विचार अपने साथ चिन्ता, भय, क्रोध, कलह आदि लाते हैं और यह ऐसी अग्नियाँ हैं जो थोड़े ही दिनों में जलाकर आदमी को खोखला कर देती हैं। इस सम्बन्ध में कुछ प्रसिद्ध शरीर शास्त्रियों के विचार नीचे दिए गए हैं। डॉ. आल्स्टन लिखते हैं– ''भय, उदासी, ईर्ष्या, घृणा, निराशा, अविश्वास आदि मानसिक विकार शरीर की स्वाभाविक क्रियाओं को मंद करके खून को सुखा देते हैं। संताप और मनोव्यथा के कारण कई लोगों की मृत्यु हो गई और अनेकों का मस्तिष्क खराब हो गया।'' इस प्रकार का परिणाम स्वाभाविक ही है। चिरकालीन चिन्ता से रक्त की गति धीमी हो जाती है और चेहरे पर पीलापन, मांस पेशियों में शुष्कता आ जाती है। पलकें झूल पड़ती है, छाती बैठ जाती है, गरदन झुक जाती है एवं होट, शिर, जबड़ा आदि गिर जाते हैं। क्षोभ के कारण कई व्यक्ति अचानक मर गये। मानसिक क्षुब्धता शरीर पर ऐसे अनिष्ट कर परिणाम उपस्थित कर सकती है, जिससे वह मुर्दा कहा जा सके। सर रिचार्डसन का अनुभव है कि मानसिक कष्ट से होने वाला प्रमेह ठीक शारीरिक कारणों से होने वाले प्रमेह के समान होता है। कई रोगियों की जाँच करने पर यह स्पष्ट हो गया है कि जिगर के फोड़े का कारण पुरानी चिन्ता या मानसिक दुख होता है। निश्चय ही मानसिक क्षोभ के कारण शरीर की वृद्धि में रुकावट पड़ती है और धमनियाँ अपना काम ठीक प्रकार करने से इन्कार कर देती हैं। क्रोध, निराशा और क्षोभ शरीर में भयंकर विष उत्पन्न करते हैं, जिनसे भारी हानि होती है। लकवा, हैजा, यकृत रोग, बालों का जल्दी सफेद होना, गंजापन, रक्त की कमी, गर्भपात, मूत्ररोग, चर्मरोग, फोड़े, पसीने की अधिकता, दंत जल्दी गिरना आदि रोगों की जड़ में भय या सन्ताप छिपा होता है। हैजा या प्लेग से मरने वालों में बीमारी से मरने की अपेक्षा भय से मरने वालों की संख्या अधिक होती है। इन महत्त्वपूर्ण सम्मतियों पर ध्यान देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि मन में बुरे विचार लाने से शरीर का बड़ा अनिष्ट होता है। **स्वस्थ रहने की इच्छा करने वालों को चाहिये कि सदैव प्रसन्न रहें और बुरे विचारों को अपने पास भी न फटकने दें।**

प्रेरणा :-

खुश रहने का राज

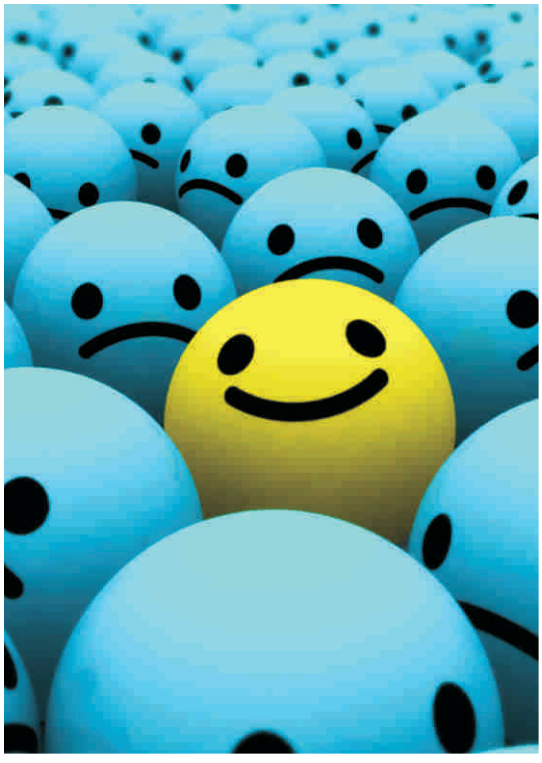

एक समय की बात है, एक गाँव में महान ऋषि रहते थे। लोग उनके पास अपनी कठिनाइयाँ लेकर आते थे और ऋषि उनका मार्गदर्शन करते थे। एक दिन एक व्यक्ति ऋषि के पास आया और उनसे एक प्रश्न पूछा। उसने पूछा कि गुरुदेव, मैं यह जानना चाहता हूँ कि हमेशा खुश रहने का राज क्या है ? ऋषि ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ जंगल में चलो, मैं तुम्हे खुश रहने का राज बताता हूँ।

ऐसा कहकर ऋषि और वह व्यक्ति जंगल की तरफ चलने लगे। रास्ते में ऋषि ने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उस व्यक्ति को कहा कि इसे पकड़ो और चलो। उस व्यक्ति ने पत्थर को उठाया और वह ऋषि के साथ साथ जंगल की तरफ चलने लगा। कुछ समय बाद उस व्यक्ति के हाथ में दर्द होने लगा लेकिन वह चुप रहा और चलता रहा। लेकिन जब चलते हुए बहुत समय बीत गया और उस व्यक्ति से दर्द सहा नहीं गया तो उसने ऋषि से कहा कि उसे दर्द हो रहा है। तो ऋषि ने कहा कि इस पत्थर को नीचे रख दो। पत्थर को नीचे रखने पर उस व्यक्ति को बड़ी राहत महसूस हुई।

तभी ऋषि ने कहा – "यही है खुश रहने का राज!'' व्यक्ति ने कहा – ''गुरुवर मैं समझा नहीं।'' तो ऋषि ने कहा – ''जिस तरह इस पत्थर को एक मिनट तक हाथ में रखने पर थोड़ा सा दर्द होता है और अगर इसे एक घंटे तक हाथ में रखें तो थोड़ा ज्यादा दर्द होता है और अगर इसे और ज्यादा समय तक उठाये रखेंगे तो दर्द बढ़ता जायेगा, उसी तरह दुखों के बोझ को जितने ज्यादा समय तक उठाये रखेंगे उतने ही ज्यादा हम दुःखी और निराश रहेंगे। यह हम पर निर्भर करता है कि हम दुखों के बोझ को एक मिनट तक उठाये रखते है या उसे जिंदगी भर। अगर तुम खुश रहना चाहते हो तो दुःख–रूपी पत्थर को जल्दी से जल्दी नीचे रखना सीख लो और हो सके तो उसे उठाओ ही नहीं।''

पैर में मोच और छोटी सोच इंसान को कभी आगे बढ़ने नहीं देती।

हमारे भामाशाह :–

श्री एस.एस. केजरीवाल KISWOK नामक नामी कम्पनी के चेयरमैन हैं। वे समय–समय पर विधवा महिलाओं और वृद्धजनों हेतु सेवा सहयोग करते रहते हैं। हाल ही में इन्होंने 25 नेत्र ऑपरेशन का सहयोग किया है। श्री केजरीवाल का बहुत–बहुत आभार।

श्री राज अरोड़ा जी नि. मसूरी (उत्तरांचल) ने हाल में 30,000/– रु. प्रति माह, का दान सहयोग का प्रण एक वर्ष के लिए लिया है। इस राशि से हर माह 3 मोतियाबिन्द ऑपरेशन, 4 परिवारों को तृप्ति सहायता और 5 विधवाओं को हर साल सहायता दी जावेगी। श्रीमान् अरोड़ा का निर्धन, निःसहायजनों की तरफ से कोटिशः आभार।

श्री रूप चन्द जी गुप्ता – श्रीमती ओमवती गुप्ता नि. बल्लभगढ़, फरीदाबाद ने जुलाई में आनन्द वृद्धाश्रम में पधार कर यहाँ की गतिविधियों को स्वयं देखा ओर काफी प्रभावित हुए। उन्होंने खुद दान सहयोग किया एवं अन्य को भी इस हेतु प्रेरित करेंगे ऐसा इरादा व्यक्त किया।

स्व. श्री श्यामलाल दम्मानी : युवाओं सा जोशीला एक बुजुर्ग

सन् 1930 में बीकानेर में जन्मे श्यामलाल जी बचपन से ही होनहार कहलाये जाते थे। मुंबई विश्वविद्यालय से एम.ए., एल.एल.बी की डिग्री हासिल कर वहीं कार्य करते हुए मुंबई के एक कपड़ा मिल से एग्जीक्यूटिव रहते हुए 60 की उम्र में रिटायर हुए। अधिकतर लोग इस उम्र में छड़ी के सहारे ही रह जाते हैं जबकि दम्मानीजी तो नौजवानों की प्रेरणा बन चुके थे। संत श्री आठवले से प्रेरित होकर उन्होंने गरीब, बेसहारा लोगों की आवाज उठाने हेतु सन् 1991 से विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में पत्र लेखन शुरू किया। गत लगभग 25 वर्षों से एक तरह का रिकार्ड कायम करते हुए वे हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी और गुजराती समाचार पत्रों में लगभग 4000 पत्र लिख चुके थे। एक संस्थानुमा पत्र लेखक बन चुके दम्मानी जी के इन प्रयत्नों की देश भर के अनेक पत्र पत्रिकाओं द्वारा कवरेज दी जा चुकी है। सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री बी. के. बिड़ला के अलावा अनेक सामाजिक संस्थाओं ने अनेक मंचों पर उन्हें "समाज सेवक" के रूप में सम्मानित किया है। इन्हें पत्र के साथ–साथ कविता लेखन एवं भजन गायन में भी महारथ हासिल थी। अनेक सामाजिक संस्थाओं के साथ सक्रियता से जुड़े हुए दम्मानी जी ने सन 1996 में स्वयं के नाम से "श्री श्यामलाल दम्मानी पत्रकारिता गौरव" नामक पुरस्कार की स्थापना की जिसके तहत अब तक कई गण्यमान्य पत्रकार एवं साहित्यकारों को पुरस्कृत किया जा चुका है।

इसी प्रकार उम्र के अंतिम पड़ाव तक जन–सेवा निभाते हुए यह महान विभूति दि. 30 अगस्त 2014 को इस दुनिया से विदा हो गई।

तारा संस्थान के मानवीय प्रकल्पों के निमित्त इनके नाम से इनके परिजनों के माध्यम से दान सहयोग प्राप्त होता रहता है। तारा परिवार की और से स्व. श्री श्यामलालजी दम्मानी को श्रृद्धा–सुमन भेंट किये जाते हैं।

खुबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते। अच्छे लोग हमेशा खुबसूरत होते हैं।

मासिक अपडेट्स :-

मोतियाबिन्द जाँच – ऑपरेशन हेतु चयन शिविर

तारा संस्थान द्वारा निर्धन वृद्ध बन्धुओं की आँखों में सामान्यतः पाये जाने वाले मोतियाबिन्द के निदान और ऑपरेशन हेतु चयन के लिए शिविर आयोजित किये जाते हैं। दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं की स्थिति अधिक ही पीड़ादायक है, क्योंकि प्रथम तो उन्हें मोतियाबिन्द–ऑपरेशन की सुविधा आसानी से उपलब्ध नहीं है एवं द्वितीय, निर्धनता उनकी चिकित्सा में बड़ा अवरोधक है। तारा संस्थान ने ऐसे निर्धन बन्धुओं की जाँच हेतु शिविर लगाने एवं चयनित मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं के शिविर स्थल के निकटवर्ती कस्बे या शहर में स्थित अधुनातन सुविधाओं से सम्पन्न नेत्र चिकित्सालयों या संस्थान के उदयपुर, दिल्ली व मुम्बई स्थित 'तारा नेत्रालय' में सर्वथा निःशुल्क ऑपरेशन करवाने का कार्य प्रारंभ किया है। निःशुल्क सुविधाओं में मोतियाबिन्द की जाँच, दवाइयाँ, लेंस, ऑपरेशन, चश्मे, रोगियों का परिवहन, भोजन तथा देखभाल आदि सम्मिलित है।

दानदाताओं के सौजन्य से माह अगस्त, 2015 के मध्य आयोजित शिविरों का संक्षिप्त विवरण

श्रीमती मोहन देवी, उदयपुर

श्री मोतीलाल, उदयपुर

श्रीमती अमरा, दिल्ली

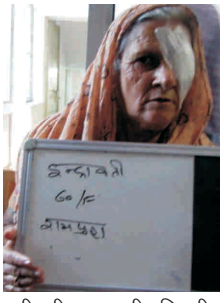

श्रीमती इन्द्रावती, दिल्ली

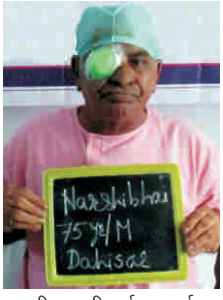

श्री नरशीभाई, मुम्बई

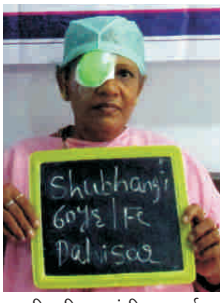

श्रीमती सुभांगी, मुम्बई

तारा नेत्रालय, उदयपुर में आयोजित शिविर

शिविर दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
01.08.2015	श्री तारा चन्द जी पुत्र श्री राधा किशन जी , पुना	82	05	21	36
03.08.2015	श्री रमेश एजेन्सी, पुना	134	26	46	74
10.08.2015	श्री राजेश इन्द्र कुमार गोठि, पुना	122	26	54	73
11.08.2015	श्री बंशी लाल जी (दिनेश ज्वेलर्स), चैन्नई (तमिलनाडु)	128	21	46	69
27.08.2015	श्रीमती शोभा देवी एवं समस्त खत्री परिवार, नागौर	108	06	25	67

तारा नेत्रालय, मुम्बई में आयोजित शिविर

01.08.2015	ओम साई मेटल प्रा. लि., मुलुण्ड (वेस्ट), मुम्बई	53	05	22	26
28.08.2015	श्रीमती सुमित्रा देवी दिलसुखराय सर्राफ, मलाड, मुम्बई	32	04	12	27

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर – 151000 रु.
चश्मा जाँच – चश्मा वितरण – दवाई सहयोग राशि, प्रति शिविर – 21000 रु.

सच्चाई के रास्ते पर चलना फायदे की बात होती है। क्योंकि इस राहपर भीड़ कम होती है।

Tara
बुजुर्गों के लिए...

अन्य दानदाताओं के सौजन्य से देशभर में आयोजित शिविरों की झलकियाँ

दिनांक 26.08.2015 को तारा संस्थान ने एक विशाल 23 वां नेत्र शिविर अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य फेडरेशन (IVF), नई दिल्ली के तत्त्वावधान में आयोजित किया। इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य फेडरेशन के कार्यकारी अध्यक्ष श्री सत्यभूषण जैन ने डॉ. हर्षवर्धन, मंत्री, भारत सरकार का मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत किया। धीरपुर, निरंकारी कॉलोनी, नई दिल्ली - 9 में रख गए इस अति सफल शिविर में 646 लोगों की ओ.पी.डी. हुई तथा 44 मरीज मुफ्त मोतियाबिन्द ऑपरेशन के लिए चुने गए।

श्री सुभाष चन्द्र प्रभु दयाल जी अग्रवाल
फतेहपुरा (दाहोद)

लाग्राण्डे हर्ब्स एंड फार्मा लिमिटेड - हरिद्वार

वीर प्रभु प्रिन्टर्स प्रा. लि., उधना, सूरत (गुज.)

मोहनी वलीचा, जे.पी.बी.जे. रोड, पिले पारले, मुम्बई

श्री विमल तोरमल पौद्दार चैरिटेबल ट्रस्ट, सूरत

श्री पंकज भाई कापडिया, नवचेतन सोसायटी,
सूरत (गुज.)

शिविर दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	स्थान	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
09.08.2015	वीर प्रभु प्रिन्टर्स प्रा. लि., उधना, सूरत (गुज.)	मावली, उदयपुर (राज.)	154	10	39	76
13.08.2015	श्रीमती शमा - श्री रमेश सचदेवा, समस्त सचेदवा परिवार, दिल्ली	राजापुरी, उत्तम नगर, दिल्ली	450	19	233	324
15.08.2015	लाग्राण्डे हर्ब्स एंड फार्मा लिमिटेड - हरिद्वार	लोनी, गाजियाबाद (यू.पी.)	487	18	254	367
16.08.2015	श्री सुभाष चन्द्र प्रभु दयाल जी अग्रवाल, फतेहपुरा (दाहोद), गुज.	सवना, उदयपुर (राज.)	176	19	66	87
19.08.2015	श्री पंकज भाई कापडिया, नवचेतन सोसायटी, सूरत (गुज.)	बड़गाँव, उदयपुर (राज.)	268	08	25	120
23.08.2015	श्री विमल तोरमल पौद्दार चैरिटेबल ट्रस्ट, सूरत (गुज.)	कानोड़, उदयपुर (राज.)	238	28	50	176
26.08.2015	श्रीमती सुषमा - श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	धीरपुर, दिल्ली - 9	646	44	372	413
30.08.2015	मोहनी वलीचा, जे.पी.बी.जे. रोड, विर्ले पारले, मुम्बई	बोरीवली (W), मुम्बई	180	06	51	63

जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते, तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते।

स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्ढा की प्रेरणा से
''The Ponty Chaddha Foundation'' के सौजन्य से आयोजित शिविर

स्व. श्री पोण्टी चड्ढा

शिविर दिनांक	स्थान	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
02 अगस्त, 2015	गुरुद्वारा कलगीधर सभा रमानी कम्पाउण्ड, लिंक रोड, दहीसर (ई.) मुम्बई	179	12	55	69
07 अगस्त, 2015	गुरुद्वारा श्री बाला साहिब आश्रम, महारानी बाग, दिल्ली	320	28	182	195
09 अगस्त, 2015	सचखण्ड नानक धाम (Regd.), गुरुद्वारा रोड, इन्द्रापुरी, लोनी, गाजियाबाद	438	28	196	270
16 अगस्त, 2015	कलगीधर दरबार, सेक्टर नं. 5, श्री नगर, वागले स्टेंड, थाने (महाराष्ट्र)	182	11	59	73

इस शिविरों में चयनित सभी रोगियों के तारा नेत्रालय, दिल्ली एवं मुम्बई में निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन करवाए गए हैं।

मानवीय सेवा सौजन्य के लिए तारा संस्थान, उदयपुर, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी एवम् वेव इन्फ्राटेक, दिल्ली के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है एवं स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

आपकी रचनाएँ :- ईश्वर अल्लाह तेरे नाम ! सब को सम्मति दे भगवान !!

सत्–चित्–आनन्द सच्चिदानन्द आप हमारे पिता हैं। हम आपकी सन्तान है। इस धरा पर आपने हमें सुन्दर, सर्वश्रेष्ठ व ब्रह्माण्ड की सभी शक्तियाँ हमारे हाथ में दी हैं। हमारे जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए सृष्टि की रचना की जो स्वयं में अनेक खुबसूरतियों से परिपूर्ण हैं। जिसमें जल, थल, वायु, अग्नि व आकाश हैं। दिन के उजाले व ऊर्जा के लिए सूर्य व रात को चन्द्रमा और सितारे अपनी शीतलता प्रदान करते हैं। भोजन व्यवस्था के लिए अनेक भोज्य पदार्थ, फल–फूल दिए, मनोहारी बाग–बगीचे दिए। हमारी सुरक्षा व सहायता के लिए अनेक पशु–प्राणी की उत्पत्ति सुनिश्चित की। पर्यावरण को ठीक रखने के लिए अनेक कीट पतंगें पैदा किये हालांकि वे सभी एक दूसरे के आहार हैं। अर्थात् हमें सबल करने के लिए आध्यात्मिक और भौतिक सम्पदा से भी सम्पन्न किया। लेकिन हम सांसारिक सम्पदाओं में इतने उलझ गए कि हमने खुद अविरल बहती स्थिति को बदलना शुरू कर दिया है। जिसके परिणामस्वरूप जल, थल व नभ की परिस्थिति बदलने लगी। धीरे–धीरे हम अनेक प्रकार की जटिल समस्याओं का सामना करने लगे। जिसे हम अपनी खुशहाली उन्नति समझ रहे हैं वह एक प्रकार से अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा ही है। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमें ऐसी सुमति प्रदान करें जिससे कि हम शीघ्र चेतें और अपनी बिगड़ती स्थिति को समय रहते सम्भाल लें व अपनी श्रेष्ठता भी खोने से बच जाएँ।

धन्यवाद....!

नवलकिशोर गुप्ता
समाज सेवक, फरीदाबाद

अगर आप सैंकड़ों इंसानों का पेट नहीं भर सकते तो केवल एक को भोजन दीजिये।

स्वागत :-

तारा संस्थान में पधारे अतिथि महानुभावों का स्वागत सम्मान

श्री कांति किरण राजपूत
लश्कर, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

श्री राम अवतार कंसल
हापुड़ (उत्तर प्रदेश)

''तारा परिवार का सौभाग्य कि आपने अभिनन्दन का अवसर प्रदान किया''

श्री जगदीश राय मल्होत्रा, मोहाली (पंजाब)

श्री सुरेश चन्द गुप्ता, पंचकुला

श्री संजय कुमार एवं परिवार, चण्डीगढ़

श्री एस.पी.एस. मित्तल, पंचकुला

श्री ब्रह्म स्वरूप सक्सेना, बीकानेर (राज.)

श्री मूलक राज बेदी, चण्डीगढ़

हार्दिक श्रद्धांजलि

श्रीमती चन्द्रकान्ता मंगला (उम्र 68,) पत्नी श्री छुट्टन लाल मंगला दिनांक 24 जून 2014 को संस्थान (आनन्द वृद्धाश्रम) में दोनों पति व पत्नी वृद्धाश्रम में रहने के लिए दिल्ली से आयें। श्रीमती चन्द्रकान्ता मंगला के कमर का ऑपरेशन करवाने के बाद वह पेरालिसिस में चली गयी थी। संस्थान में जब आई तब वह पाँव से चल फिर नहीं सकती थी। दिनांक 23 अगस्त, 2015 सायं 8 बजे संस्थान में उनका निधन हो गया। तारा परिवार की ओर से उनकी दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की गई।

यदि संघर्ष नहीं है तो प्रगति नहीं है।

Thanks

NAME AND PLACE OF THE DONORS, WE ARE GRATEFUL TO THEM

Donors are requested kindly to send their photographs alongwith Donation for publishing in TARANSHU

Mr. Dhanraj Mittal & Mrs. Radha Mittal
Kota (Raj.)

Mr. Ummed Raj & Mrs. Maina Devi Thanwala
Nagaur (Raj.)

Mr. R.M. Talwani & Mrs. Chandrakanta Talwani
Ludhiana (Punjab)

Mr. Kamal Sharma & Mrs. Mamta Sharma
Jaipur (Raj.)

Mr. Seeta Ram Ji & Mrs. Jashoda Ji
Kuchera - Nagaur (Raj.)

Capt. A.N. Raina & Mrs. Aasha Raina
Hargarh (Navi Mumbai)

Mr. Raghunath Prasad Verma with Wife
Noida (UP)

Mr. Ram Sagar & Mrs. Suman Pandey
Allahabad (UP)

Mr. Madan Lal & Mrs. Bhagwati Sharma
Jaipur (Raj.)

Mr. Banwari Lal Sharma & Mrs. Geeta Parikh
Jaipur (Raj.)

Mrs. Snehalata Singh & Mr. Murari Singh
Rewa (MP)

Mr. Ashok Jhalani & Mrs. Usha Jhalani
Jaipur (Raj.)

Mr. Sunil Jain
Sikar (Raj.)

Lt. Mrs. Shakuntala Bai

Mrs. Santosh Ji

Mr. Sohan Lal Ji

Mr. Paras Mal Bhandari
Jodhpur (Raj.)

Mr. C.S. Modi
Bikaner (Raj.)

Mr. Ravindra Bansal
Rajpura (Punjab)

Mrs. Devi A. Golani
Thana (W), Mumbai

Mr. Rajeev Poddar
Bikaner (Raj.)

Mr. B.K. Puri
Ludhiana (Punjab)

Mr. Hari Singh Saini
Udaipur (Raj.)

Mr. Munna Lal Ji Garg
Bulandshahar (UP)

Mr. R.P. Chaudhary
Jabalpur (MP)

Mrs. Seeta Devi
Kota (Raj.)

Mr. Tara Chandra Ji

Lt. Mr. Bal Kishan Khatri
Nagaur (Raj.)

Mr. Manish Bhardwaj
Jaipur (Raj.)

Mr. Vishnu Sharma
Kota (Raj.)

Miss. Isha Garg
Sampala (HR)

Miss. Nupur Garg
Sampala (HR)

Mrs. Sunita Garg
Sampala

NAME AND PLACE OF THE DONORS, WE ARE GRATEFUL TO THEM

Donors are requested kindly to send their photographs alongwith Donation for publishing in TARANSHU

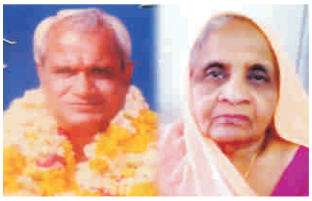

Lt. Mr. G.R. Parihar & Mrs. Dheli Bai
Jodhpur (Raj.)

Mr. Ram Gupta & Mrs. Kamla Gupta
Satna (MP)

Mr. Hari Singh & Mrs. Pramila Gehlot
Udaipur (Raj.)

Mr. Ram Naresh Singh & Mrs. Chameli Devi
Kailahat (UP)

Mr. Ashok Kumar Dakoria & Mrs. Vimla Bai
Hyderabad (AP)

Mr. Rakesh Gupta & Mrs. Anupam Gupta
Varanasi (UP)

Mr. Ramesh Kumar & Mrs. Rama Khare
Basana (Mahasamund)

Mr. Radheyshyam & Mrs. Usha Agrawal
Akola (Maharashtra)

Mr. Tara Chand & Mrs. Pushpalata Jagid
Yavatmal (Maharastra)

Mr. Nathmal Dahima & Mrs. Kaushaliya Devi
Village - Loonsara, (Nagaur - Raj.)

Mr. Ashok Kumar & Mrs. Manisha Pathak
Damoh (MP)

Mr. Prakash Mal Bhansali & Lt. Mrs. Prasann Kanwar
Jodhpur (Raj.)

Mr. Shanker Khatri
Kota (Raj.)

Mr. Sunil Kumar Khatri
Bikaner (Raj.)

Mr. Pratap Narayan Agrawal
Lucknow (UP)

Mrs. Madhu Reeta
Muktsar (Punjab)

Dr. C.S. Modi
Bikaner (Raj.)

Mrs. Sudarshan Sharma
Chandigarh

Mrs. Manju Agrawal
Bareilly (UP)

Mr. Jinendra Kumar Jain
Bikaner (Raj.)

Mr. Krishna Kumar Suthar
Bikaner (Raj.)

Mr. Subhash Ji
Dahod, Fatehpura

Mr. Har Govind Lahoti
Ujjain (MP)

Mrs. Savitri Devi Lahoti
Ujjain (MP)

Mr. Suresh Chandra Sharma
Bareilly (UP)

Mr. Shyam Narayan
Bareilly (UP)

Mr. Sudha

Mrs. Veena Sharhi
Sonipat (HR)

Lt. Mr. Kritisharan Agrawal
Delhi

Mrs. Kusum Agrawal
Delhi

Mrs. Asha Ji Vadhva
Jaipur (Raj.)

Mr. Ramvilas Jain

Mr. Ishwar Prasad Garg
Sampala (HR)

FCRA

Tara Sansthan is registered under Foreign Contribution Regulation
Act (FCRA) with the Govt of India for receiving Donations from Foreign Countries VIDE Registration No. 125690108

'Tara' Contact Details - Office

Mumbai Office : Unit No. 1408/7, 1st Floor, Israni Indl. Estate, Penkarpara, Nr. Dahisar Check-post, Thane - 401104 (M.S.) INDIA
Jagdish Choubisa Cell : 07821855748, Shri Bharat Menaria Cell : 07821855755

Delhi Office: WZ-270, Village - Nawada, Opp. 720, Metro Pillar, Uttam Nagar, Delhi - 59, Shri Amit Sharma Cell : 07821855747

Surat Office : 295, Chandralok Society, Parwat Gaon, Surat (Guj.), Shri Prakash Acharya Cell : 08866219767

'Tara' Centre - Incharge

Shri S.N. Sharma
Mumbai (M.S.)
Cell : 09869686830

Smt. Rani Dulani
10-B/B, Viceroy Park, Thakur Village,
Kandiwali (W), Mumbai - 400 101, Cell : 09029643708

Shri Pawan Sureka Ji
Madhubani (Bihar)
Cell : 09430085130

Shri Satyanarayan Agrawal
Kolkata
Cell : 09339101002

Shri Bajrang Ji Bansal
Kharsia (CG)
Cell : 09329817446

Smt. Pooja Jain
Saharanpur (UP)
Cell : 09411080614

Shri Naval Kishor Ji Gupta
Faridabad (HR.)
Cell : 09873722657

Shri Anil Vishvnath Godbole
Ujjain (MP)
Cell : 09424506021

Shri Vishnu Sharan Saxena
Bhopal (M.P.)
Cell : 09425050136, 08821825087

Lt. Col. A.V.N. Sinha
Lucknow
Cell : 09598367090

Shri Dinesh Taneja
Barelly (UP)
Cell : 09412287735

Area Specific Tara Sadhak

Shri Kamal Didawania
Area Chandigarh, Haryana
Cell : 07821855756

Shri Ramesh Yogi
Area Lucknow (UP)
Cell : 09694979090

Shri Rameshwar Jat
Area Gurgaon, Faridabad
Cell : 07821855758

Shri Sanjay Choubisa
Shri Gopal Gadri
Area Delhi
Cell : 07821055717, 07821855741

Shri Bhanwar Devanda
Area Noida, Ghaziabad
Cell : 07821855750

Shri Vikas Chaurasia
Area Jaipur (Raj.)
Cell : 09983560006
09414473392

Donors Kindly NOTE

It you do not get any response from any of the above mentioned Mob. numbers, Kindly inform us at Mobile No. 09549399993 and / or 09649399993

INCOME TAX EXEMPTION ON DONATIONS

Donations to Tara Sansthan are TAX-EXEMPT under section 80G and 35 AC / 80GGA of I.T. Act. 1961 at the rate of 50% and 100%

Donation to Tara Sansthan may be sent by cheque/draft drawn in favor of Tara Sansthan, payable at Udaipur, OR may be remitted direct into any of the following Bank Accounts, with caopy of pay-in-slip and Donor's address to Tara Sansthan, Udaipur for expediting Donation Acknowledgment Receipt

Tara Sansthan Bank Account

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965 **IFS Code : icic0000045**
SBI A/c No. 31840870750 **IFS Code : sbin0011406**
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645 **IFS Code : IBKL0001166**
Axis Bank A/c No. 912010025408491 **IFS Code : utib0000097**

HDFC A/c No. 12731450000426 **IFS Code : hdfc0001273**
Canara Bank A/c No. 0169101056462 **IFS Code : cnrb0000169**
Central Bank of India A/c No. 3309973967 **IFS Code : cbin0283505**

For online donations - kindly visit - www.tarasansthan.org **Pan Card No. Tara - AABTT8858J**

TARA NETRALAYA

WZ-270, Village - Nawada, Opp. 720, Metro Pillar, Uttam Nagar, Delhi - 59
DELHI HOSPITAL - Tara Netralaya, +91 9560626661, 011-25357026

TARA NETRALAYA

Unit No. 1408/7, 1st Floor, Israni Indl. Estate, Penkarpara, Nr. Dahisar Check-post, Meera Road, Thane - 401107 (M.S.) INDIA
MUMBAI HOSPITAL - Tara Netralaya, Shankar Singh Rathore +91 8452835042, 022 - 28480001

तारांशु (हिन्दी - अंग्रेजी) मासिक - सितम्बर, 2015
प्रेषण तिथि - 11-18 प्रति माह
प्रेषण कार्यालय का पता : उपडाकघर, शास्त्री सर्कल, उदयपुर
समाचार पत्र पंजीयन सं. : RAJBIL/2011/42978
डाक पंजीयन क्र. : आर.जे./यू.डी./29-102/2015-2017
मुद्रण तिथि : 9 प्रतिमाह

तारा संस्थान के नि:शुल्क मानवीय सेवा प्रकल्प, आपसे प्रार्थित अपेक्षित सहयोग -सौजन्य राशि

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन)

01 ऑपरेशन - 3000 रु., 03 ऑपरेशन - 9000 रु., 06 ऑपेरशन - 18000 रु., 09 ऑपरेशन - 27000 रु., 17 ऑपरेशन - 51000 रु.

नेत्र शिविर सौजन्य

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.
चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

तृप्ति योजना सेवा	गौरी योजना सेवा	आनन्द वृद्धाश्रम सेवा
(प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता)	(प्रति विधवा महिला सहायता)	(प्रतिबुजुर्ग)
01 माह - 1500 रु.	01 माह - 1000 रु.	01 माह - 5000 रु.
06 माह - 9000 रु.	06 माह - 6000 रु.	06 माह - 30000 रु.
01 वर्ष - 18000 रु.	01 वर्ष - 12000 रु.	01 वर्ष - 60000 रु.

एक विधवा महिला के बच्चे की शिक्षा हेतु वार्षिक सहयोग - 12000 रु.

सहयोग राशि - आजीवन संरक्षक 21000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 2 मोतियाबिन्द ऑपरेशन,
आजीवन सदस्य 11000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 1 मोतियाबिन्द ऑपरेशन (संचितनिधि में)

दान पर आयकर में छूट : तारा संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G व 35AC/ 80GGA के अन्तर्गत आयकर में 50% व 100% छूट योग्य मान्य है।

निवेदन : कृपया अपना दान - सहयोग नकद या 'तारा संस्थान, उदयपुर' के पक्ष में देय
चैक/ड्राफ्ट द्वारा संस्थान के पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें, अथवा : अपना दान सहयोग तारा संस्थान के निम्नांकित किसी बैंक खाते में जमा करवा कर 'पे-इन-स्लिप' अपने पते सहित संस्थान को प्रेषित करें ताकि दान - सहयोग प्राप्ति रसीद आपको तत्काल भेजी जा सके।

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965	IFS Code : icic0000045	HDFC A/c No. 12731450000426	IFS Code : hdfc0001273
SBI A/c No. 31840870750	IFS Code : sbin0011406	Canara Bank A/c No. 0169101056462	IFS Code : cnrb0000169
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645	IFS Code : IBKL0001166	Central Bank of India A/c No. 3309973967	IFS Code : cbin0283505
Axis Bank A/c No. 912010025408491	IFS Code : utib0000097	Pan Card No. Tara - AABTT8858J	

जो दानदाता आयकर में 35 AC के अन्तर्गत छूट प्राप्त करना चाहते हैं वे हमारे इस खाते में दान प्रेषित करें :
खाता सं. :- 693501700205, ICICI बैंक, सेक्टर 4, उदयपुर

'तारा' के सेवा प्रकल्पों का कृपया टी.वी. चैनल्स पर प्रसारण देखें :-

'पारस' रात्रि 9.20 से 9.40 बजे	'आस्था भजन' प्रात: 8.40 से 9.00 बजे	'आस्था' रविवार दोपहर 2.30 बजे

बुक पोस्ट

Tara
बुजुर्गों के लिए...
तारा संस्थान
डीडवाणिया (रतनलाल) नि:शक्तजन सेवा सदन
236, सेक्टर - 6, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) 313002
मो. +91 9549399993, +91 9649399993
Email : info@tarasansthan.org, donation@tarasansthan.org
Website : www.tarasansthan.org